IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जैविक खेती- एक जरूरत

***डॉ. अनिल कुमार,**

असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,

श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, सिकंदरपुर,

बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

जैविक खेती वर्तमान समय की मांग है। इस प्रकार के खेती में रासायनिक खादों या पेस्टिसाइड का प्रयोग नही किया जाता हैं, जिससे पर्यावरण स्वच्छ रहता है और खाद्य पदार्थ रसायन मुक्त रहता है, जिससे लोगों को गंभीर रोग नहीं होता हैं। जैविक खेती में हरी खाद, कम्पोस्ट खाद का प्रयोग किया जाता हैं और कीटो के लिए जैविक कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता हैं। जैविक खेती के उत्पादों से किसानों को अच्छी कीमतें मिलती है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है।

Key words- रासायनिक खाद, पेस्टिसाइड, जैविक खेती, हरी खाद, कम्पोस्ट खाद, फसल चक्र, पर्यावरण, उपभोक्ता, उर्वरा शक्ति, टिकाऊपन, उत्पादकता।

जैविक खेती-

जैविक खेती वह कृषि विधि है जिसमें रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक या अन्य सिंथेटिक पदार्थों का उपयोग नहीं किया जाता। इसके बजाय कंपोस्ट, हरी खाद, जीवाणु, मित्र कीट और फसल चक्रण जैसे प्राकृतिक उपायों से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाई जाती है और कीट-पतंगों को नियंत्रित किया जाता है। इससे न सिर्फ पर्यावरण स्वच्छ रहता है, बल्कि उपभोक्ताओं का स्वास्थ्य भी सही रहता हैं।

भारत में जैविक खेती की शुरुआत-

हमारे देश में जैविक खेती को आधिकारिक तौर पर 2015 में 'राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन' के तहत, परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY) के रूप में शुरू किया गया। इसका मुख्य लक्ष्य क्लस्टर-आधारित जैविक खेती को बढ़ावा देना, रासायनिक आगतों से दूर रहना और किसानों की आय बढ़ाना था।

वर्तमान में देश में सिक्किम जैसे राज्य पूरी तरह जैविक बन चुके हैं और शेष राज्य जैसे असम, लद्दाख बहुत तेजी से जैविक खेती की ओर अग्रसर हैं।

जैविक खेती और दीनदयाल जी के विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी देश के एक प्रमुख विचारक रहे। दीनदयाल जी बहुत आर्थिक मुद्दों पर अपने विचार रखे। इन्हीं विचारों में से एक विचार है, कृषि के विकास पर आर्थिक विचार।

दीनदयाल जी अपने इस विचार के अंतर्गत कृषि विकास हेतु उर्वरक के रूप में गोबर की खाद के प्रयोग की बात करते है। उनका विचार था कि खाद के रूप में हमे गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए, बहुत दिक्कत होने पर भी यदि रासायनिक खाद प्रयोग करना है तो इसे हर संभव गोबर की खाद के साथ मिलाकर प्रयोग करना चाहिए जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बचा रहे।

उर्वरा शक्ति के बचे रहने पर खेती, दीर्घकालिक होगा और खेती में टिकाऊपन रहेगा।

जैविक खेती के लाभ-

जैविक खेती के बहुत लाभ है, जो इस प्रकार है-

जैविक खेती से मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है, क्योंकि कंपोस्ट व हरी ख़ाद से जैविक पदार्थ मिलते हैं। कीड़े-पतंगे कम होते हैं, इसलिए रासायनिक कीटनाशक की जरूरत नहीं पड़ती।

जैविक खेती में रासायनिक चीजों के प्रयोग न होने से उत्पाद में पोषक तत्व ज्यादा होते हैं, इसलिए स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ता है।

भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है, खेती में कम पानी की जरूरत पड़ती है, जिससे सिंचाई कम खर्चीली होती है।

जैविक खेती में रासायनिक चीजों का प्रयोग न करने से पर्यावरण को नुकसान नहीं होता। हवाएं, मिट्टी प्रदूषित नही होती है और जैव विविधता बनी रहती है।

जैविक खेती के समक्ष चुनौतियां-

वर्तमान में जैविक खेती करना बहुत जरूरी है, परन्तु जैविक खेती करना किसानों के लिए आसान भी नही है। जैविक खेती के रास्ते में बहुत चुनौतियां है, जो इस प्रकार है-

कीट-पेस्ट नियंत्रण- रासायनिक दवाइयों की जगह बायो-पेस्टिसाइड्स का प्रयोग करना पड़ता है, जो कभी-कभी कम प्रभावी होते हैं। कम प्रभावी होने पर कीड़े फसलों को बर्बाद कर देते हैं।

उत्पादकता घटना- जैविक खेती में शुरुआती सालों में फसल की पैदावार अक्सर घट जाती है, क्योंकि मिट्टी को फिर से जीवाणु-संतुलन बनाना पड़ता है।

बाजार एवं कीमत- जैविक खेती में उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता है, लागत थोड़ी ज्यादा हो जाती है। वर्तमान में जैविक उत्पादों की मांग अभी भी सीमित है और सही मूल्य मिलना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है।

ज्ञान एवं प्रशिक्षण- जैविक खेती करने के लिए किसानों को ज्ञान और ट्रेनिंग की जरूरत पड़ती है। सही तकनीक, कंपोस्ट बनाना, फसल चक्रण आदि सीखने में समय और संसाधन लगते हैं।

संसाधनों की कमी- जैविक खेती के लिए किसानों को जैविक खाद, बायो-पेस्टिसाइड्स जैसे चीजों की जरूरत पड़ती है जो कि महंगे होते हैं।

जैविक खेती के चुनौतियों का समाधान-

जैविक खेती के समक्ष खड़ी चुनौतिओं से निपटने के लिए कुछ समाधान इस प्रकार हैं, जो प्रभावी होते है-

कीट पेस्ट नियंत्रण-

जैविक खेती में नीम, कड़वा तेल, लिलिया आदि बायो-पेस्टिकेंट का प्रयोग करने से, फसल चक्रण से और मिश्रित बुवाई से कीटों का प्रभाव फसलों पर कम किया जा सकता हैं।

मिट्टी की उर्वरता-

जैविक खेती में कंपोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, हरी खाद के प्रयोग से उर्वरा शक्ति को और उत्पादकता को बहुत हद तक बढ़ाया जा सकता हैं।

बाजार एवं मूल्य निर्धारण-

जैविक खेती करने वाले स्थानीय किसान, समूह अथवा सहकारी बनाकर फसलों की सीधे बिक्री करे, ऑनलाइन प्लेटफार्म का प्रयोग करें और 'ऑर्गेनिक' का प्रमाणपत्र लेकर फसलों को अच्छे मूल्य पर बेच सकते हैं।

ज्ञान एवं प्रशिक्षण-

किसानों को कृषि विभाग, एनजीओ और कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। जैविक खेती करने वाले किसानों को अपना अनुभव साझा करना चाहिए।

सरकारी पहल-

जैविक खेती वर्तमान समय की मांग है, जरूरत है। देश की सरकारें भी जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है, बहुत सारी योजनाएं है जैसे-

परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)- इस योजना के अंतर्गत किसानों को जैविक खेती के लिए हर हेक्टेयर पर 50000 रुपये तक की मदद सरकार दे रही है और कंपोस्ट, जैविक खाद, बीज का खर्च सरकार उठाती है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)- सरकार किसानों को ट्रैक्टर, थ्रेसर आदि पर 40-50 % सब्सिडी देती है, जिससे लागत कम हो।

कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड (AIF)- सरकार किसानों को इस योजना के अंतर्गत गोदाम, कोल्ड स्टोरेज आदि के लिये 2 करोड़ रुपये तक सस्ता लोन देती है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)- इस योजना के अंतर्गत सरकार किसानों को प्राकृतिक आपदा से फसलों को नुकसान होने पर मुआवजा प्रदान करती है।

सरकार के विभिन्न योजनाओं का उद्देश्य किसानों के आय को बढ़ाना, रासायनिक आगतों को कम करना और टिकाऊ व दीर्घकालिक खेती को प्रोत्साहित करना है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कुछ प्रमुख सुझाव-

1. मिट्टी की सेहत हेतु कम्पोस्ट, गोबर की ख़ाद और हरी पत्तियों से जैविक पदार्थों को जोड़ना चाहिए।
2. फसल चक्र जरूर अपनाएं, एक ही फ़सल को बार बार नही बोना चाहिए।
3. कीटो के रोकथाम के लिए नीम, लिल्ली, तुलसी जैसे प्राकृतिक कीट निरोधक चीजों का प्रयोग करना चाहिए।
4. किसानों को आपस में मिलकर समूह बनाना चाहिए, जिससे जानकारी मिल सके।
5. किसानों को सरकार की सब्सिडी, कर्ज और प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रमों का जानकारी रखना चाहिए।

इन सुझावों को अपनाकर जैविक खेती को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष-

जैविक खेती एक नवीन तरीका है खेती करने का लेकिन यह वर्तमान की जरूरत है।

हमारे कुछ विचारक जैसे दीनदयाल जी, जिनका विचार की हमें उर्वरक के रूप में गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए, कहीं न कहीं जैविक खेती की ही बात करते हैं या बढ़ावा दे रहे हैं।

निष्कर्ष रूप में देखा जाय तो जैविक खेती वर्तमान समय की जरूरत है। जैविक खेती से पर्यावरण स्वच्छ और संतुलित रहता है, तो लोगों को शुद्ध और रसायन मुक्त खाद्य पदार्थ भी मिलता है, जिससे मानव समाज खतरनाक रोगों से बचा हुआ है। जैविक खेती किसानों की आर्थिक स्थिरता को भी बढ़ावा देती है।

वर्तमान समय में जैविक खेती की महत्ता को देखते हुए इसे अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संदर्भ-

1. लाल, एस.के. और एस.एन. लाल. (2016). भारतीय अर्थव्यवस्था: सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

2. दत्त एवं सुंदरम. (2015). भारतीय अर्थव्यवस्था. एस. चांद पब्लिशर.

3. उपाध्याय, दीनदयाल. (1958). भारतीय अर्थनीति- विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

4. कुलकर्णी, शरद अनंत. (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

5. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका।

6. agriculture.uk.gov.in

7. nconf.dac.gov.in